खरपतवार भी एक फूल है

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर

की कहानी
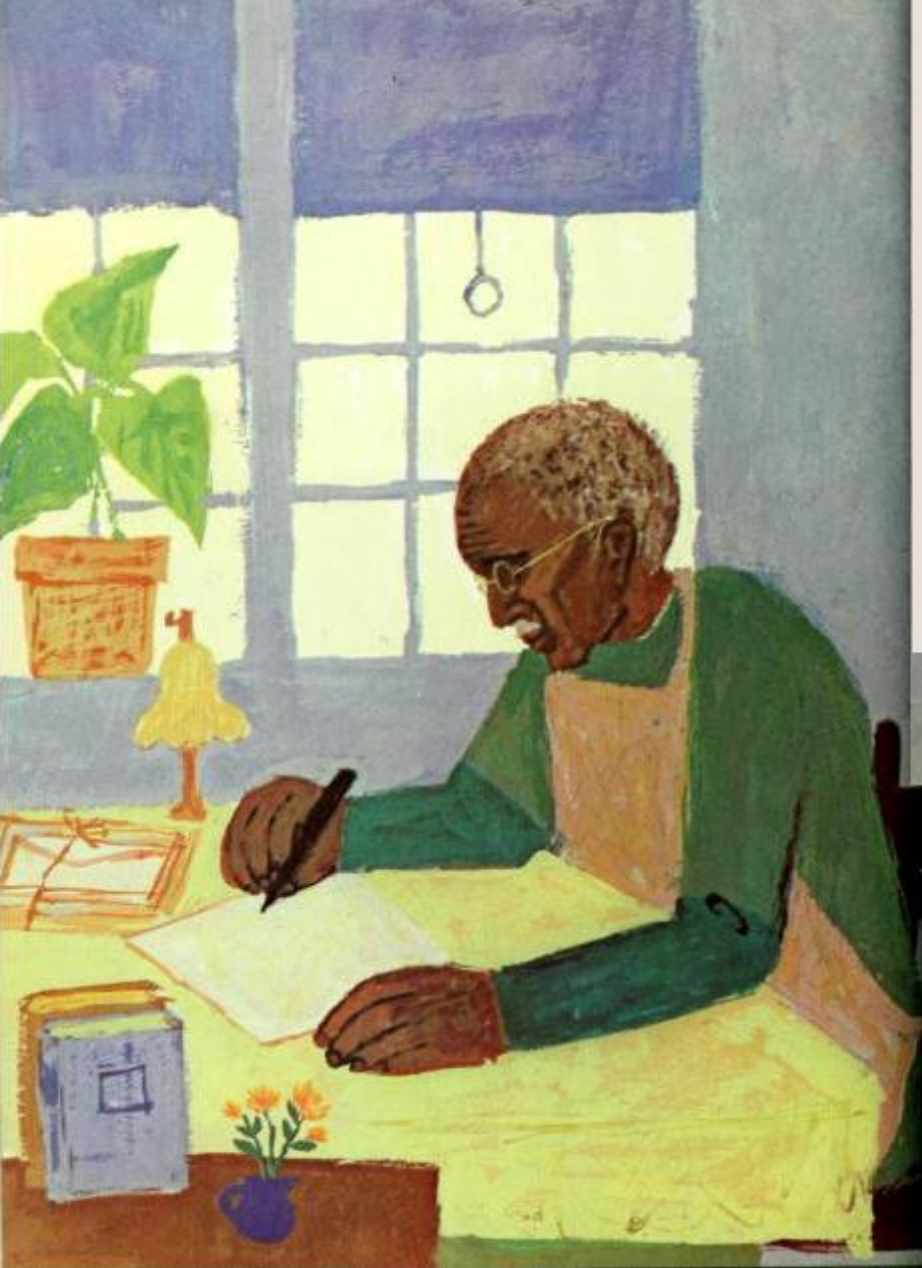
जब जॉर्ज वॉशिंगटन कार्वर का जन्म हुआ, तो उसका हाल बहुत ख़राब था. वो एक बीमार, कमजोर, छोटा बच्चा था. उसके पिता की मृत्यु हो गई थी, और उसकी माँ अकेले उसकी और उसके भाई जेम्स की देखभाल करती थी. इससे भी बदतर बात थी कि वह दासों का बेटा था. उसके लिए भविष्य में कोई उम्मीद नहीं थी.

लेकिन जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर कोई साधारण आदमी नहीं था. वो एक ऐसा इंसान था जिसने बुराई को अच्छाई, आशा को निराशा और घृणा को प्यार में बदला. उसने अपना पूरा जीवन लोगों की सहायता में और दुनिया की मदद करने में बिताया. यह उस महान वैज्ञानिक की कहानी है.

जॉर्ज वॉशिंगटन कार्वर सौ साल से भी ज्यादा पहले, 1860 में, मिसौरी में पैदा हुए. वो एक भयानक समय था. तब चोरों के गिरोह रात में चुपचाप दासों का अपहरण करते थे और रोकने की कोशिश करने वालों को मार डालते थे.

एक रात, चोरों के एक गिरोह ने मूसा कार्वर के खेत में डाका डाला. मूसा कार्वर, जॉर्ज और उसकी माँ, मैरी के मालिक थे. डाकुओं को देखकर सभी लोग डर के मारे भाग गए. लेकिन इससे पहले कि मैरी अपने बच्चे को छिपा पाती, डाकू वहां पहुंचे और वो उन दोनों को छीनकर रात के अँधेरे में भाग गए.

मूसा कार्वर ने एक आदमी को उन्हें तलाश करने के लिए भेजा. पर उसके बाद मैरी कभी नहीं मिली. लेकिन कुछ दिनों बाद वो आदमी कोट में लिपटे एक छोटे बंडल को घोड़े की काठी के पीछे बांधकर वापस लाया. वो बच्चा था, जॉर्ज.

मूसा और उसकी पत्नी सुसान ने मैरी के बच्चों की देखभाल की. जॉर्ज बचपन में छोटा और कमजोर था. लेकिन जैसे-जैसे वो बड़ा हुआ, उन्होंने देखा कि जॉर्ज एक असामान्य बच्चा था. वो अपने आसपास की हर चीज के बारे में जानने को उत्सुक था. वो बारिश, फूलों और कीड़ों के बारे में सवाल पूछता था. वो ऐसे सवाल पूछता था जिनका जवाब कार्वर दंपत्ति के पास नहीं था.
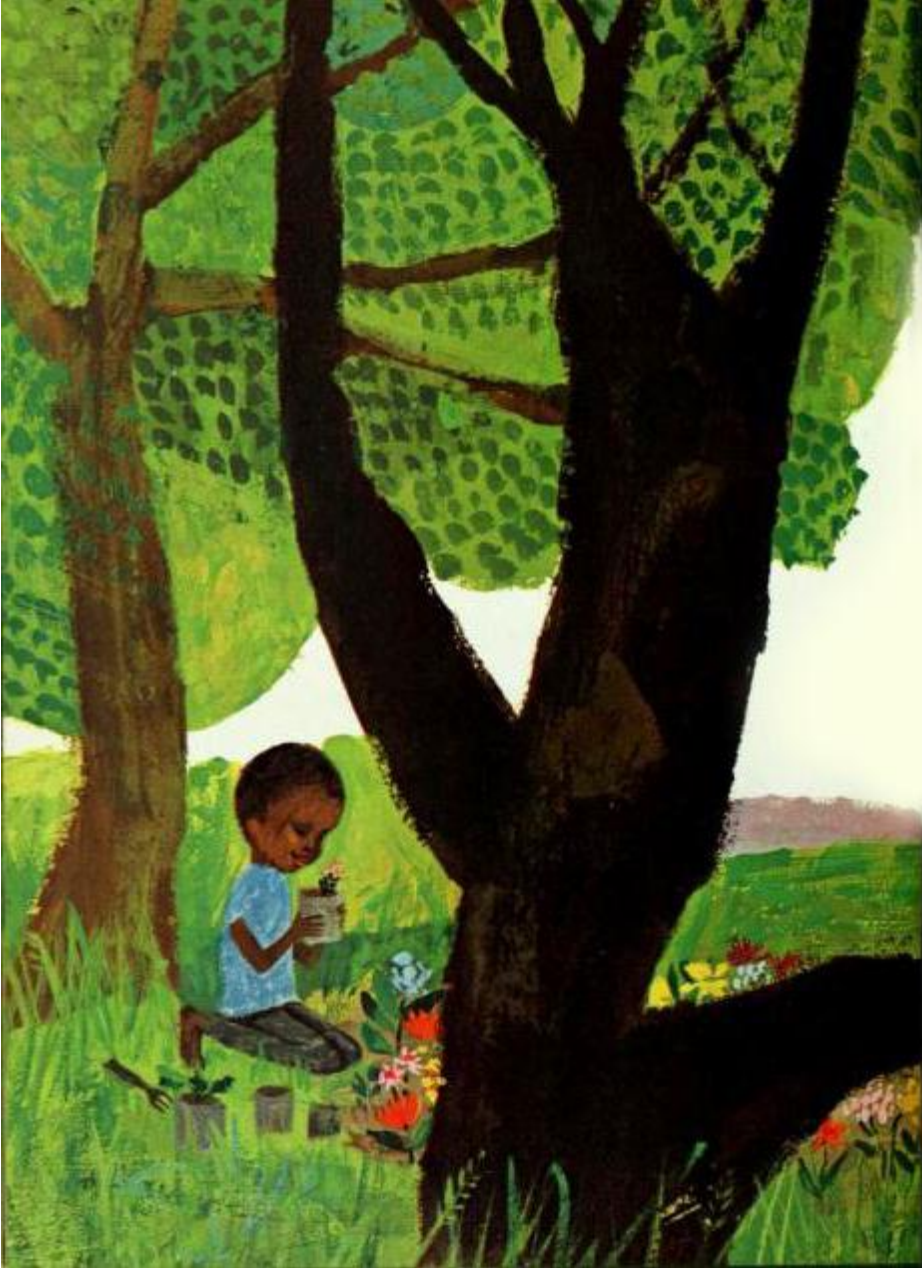
जब वह बहुत छोटा था, तब जॉर्ज ने अपने लिए एक छोटा बगीचा बनाया था. वहाँ वो पौधों की देखभाल में हर दिन घंटों बिताता था. यदि वे अच्छी तरह से नहीं बढ़ रहे होते, तो वो उसका कारण खोजता था. जल्द ही पौधे स्वस्थ होकर खिल उठते थे. सर्दियों में वो पौधों की रक्षा के लिए उनको ढँक देता था. वसंत में वो नए बीज लगाता था. वैसे वो अपने बगीचे में बिल्कुल था फिर भी जॉर्ज अकेले प्रत्येक पौधे की देखभाल करता था.

जल्द ही पड़ोसी भी जॉर्ज से पौधों के बारे में सलाह लेने के लिए आने लगे. कुछ दिनों में उसे "प्लांट डॉक्टर" के रूप में जाना जाने लगा.
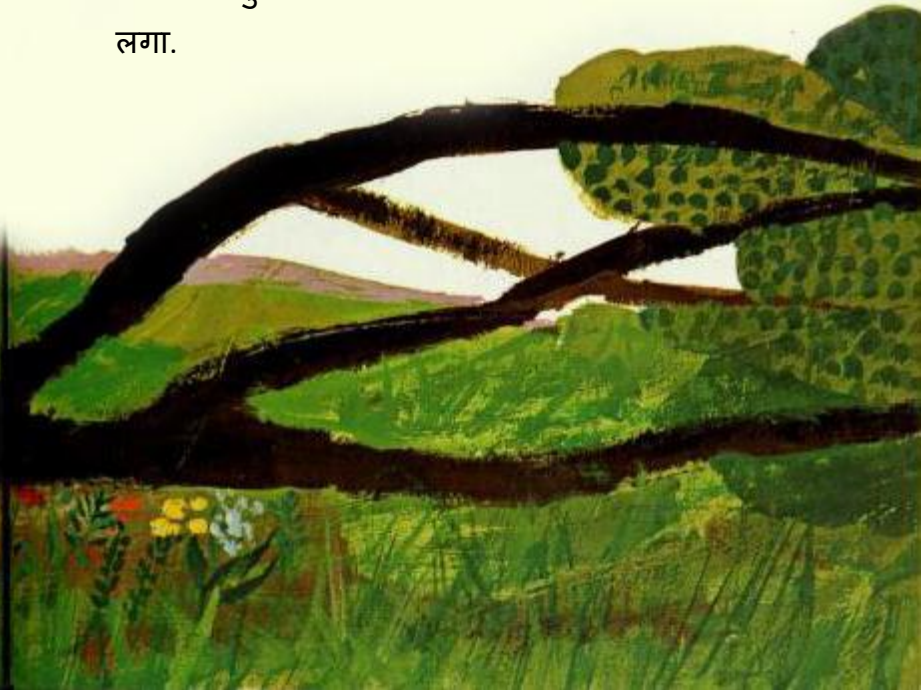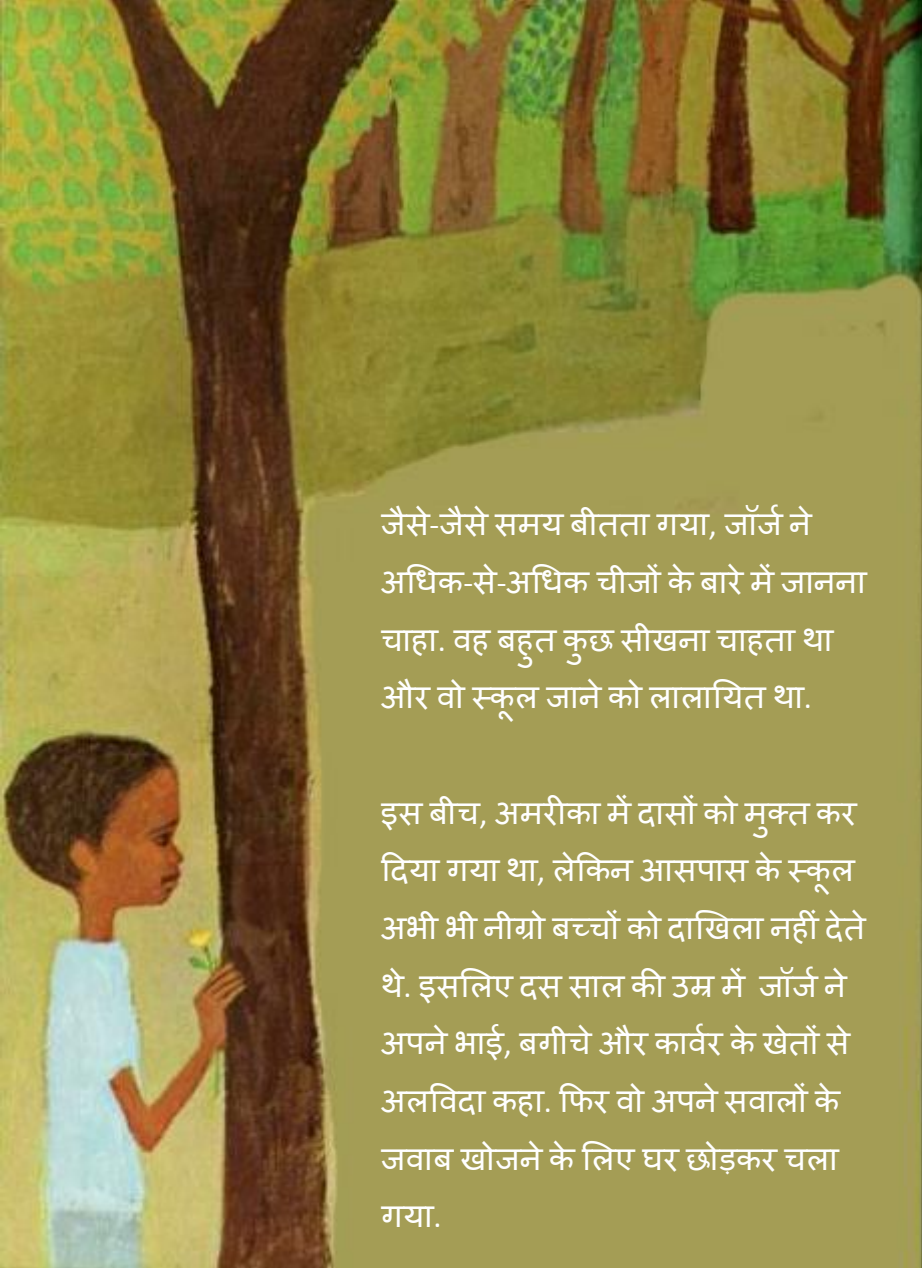
जैसे-जैसे समय बीतता गया, जॉर्ज ने अधिक-से-अधिक चीजों के बारे में जानना चाहा. वह बहुत कुछ सीखना चाहता था और वो स्कूल जाने को लालायित था.

इस बीच, अमरीका में दासों को मुक्त कर दिया गया था, लेकिन आसपास के स्कूल अभी भी नीग्रो बच्चों को दाखिला नहीं देते थे. इसलिए दस साल की उम्र में जॉर्ज ने अपने भाई, बगीचे और कार्वर के खेतों से अलविदा कहा. फिर वो अपने सवालों के जवाब खोजने के लिए घर छोड़कर चला गया.
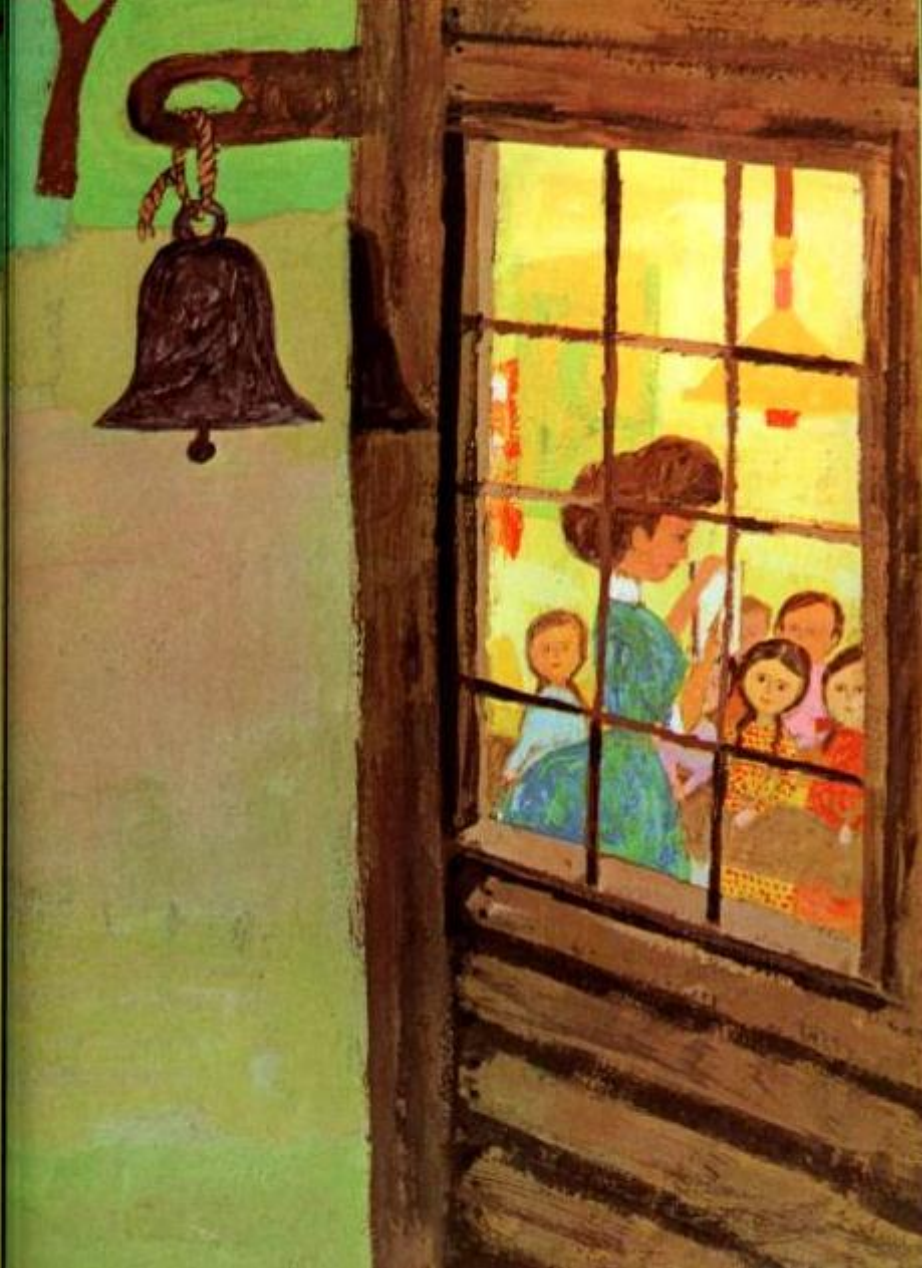
जॉर्ज वॉशिंगटन कार्वर को जहां भी स्कूल मिले, वो वहीं पर रूककर पढ़ा. उसने स्कूल की फीस और अपने लिए भोजन और रहने की जगह मुहैय्या कराने के लिए अनेक छोटे-मोटे काम किए. उसने फर्श साफ़ किए, कपड़े धोए, खाना पकाया. और जो कुछ भी जॉर्ज ने किया वो काम उसने अच्छी तरह किया. वो सबसे तुच्छ काम को भी बड़ी लगन और करीने से करता था.

कुछ लोगों ने जॉर्ज को अपने बेटे के रूप में रखा. पहले वह मरियाह और एंडी वॉटकिंस के साथ रहा, जो उसके लिए माता-पिता की तरह थे. फिर कैनसस में वो चाची लुसी और अंकल सेमोर के साथ रहा. वे भी इस शांत लड़के से प्यार करते थे. जॉर्ज हमेशा मदद के लिए तैयार रहता था.

जॉर्ज ने कई सालों तक कड़ी मेहनत की और हमेशा कॉलेज की पढ़ाई के लिए पैसा बचाने की कोशिश की. अन्य लड़के, जिनकी मदद उनके माता-पिता करते थे को बहुत जल्द कॉलेज में प्रवेश मिल जाता था. इससे पहले कि वह पर्याप्त धन बचा पाया जॉर्ज तीस साल का हो गया था. फिर भी, कॉलेज में दाखिला मिलना इतना आसान नहीं था क्योंकि सभी कॉलेज, फीस चुकाने के बाद भी नीग्रो छात्रों को स्वीकार नहीं करते थे.

जॉर्ज हतोत्साहित नहीं हुआ. वो आयोवा गया. वहां उसे एक ऐसा कॉलेज मिला जिसने ख़ुशी-ख़ुशी एक नीग्रो छात्र को स्वीकार किया.

कॉलेज में, जॉर्ज ने काम करना जारी रखा. उसने कपड़े धोने की एक छोटी लांड्री खोली जहाँ उसने अपने सहपाठियों के कपड़े धोए.

साथ-साथ उसने अपनी पढ़ाई भी जारी रखी. उसके शिक्षकों और दोस्तों को जल्द ही पता चला कि उस युवक में तमाम प्रतिभायें थीं. जॉर्ज पियानो बजाता था, बहुत सुन्दर गाता था, और साथ में वो एक उत्कृष्ट चित्रकार भी था. सच में, एक समय उसने कलाकार बनने की बात भी सोची थी.
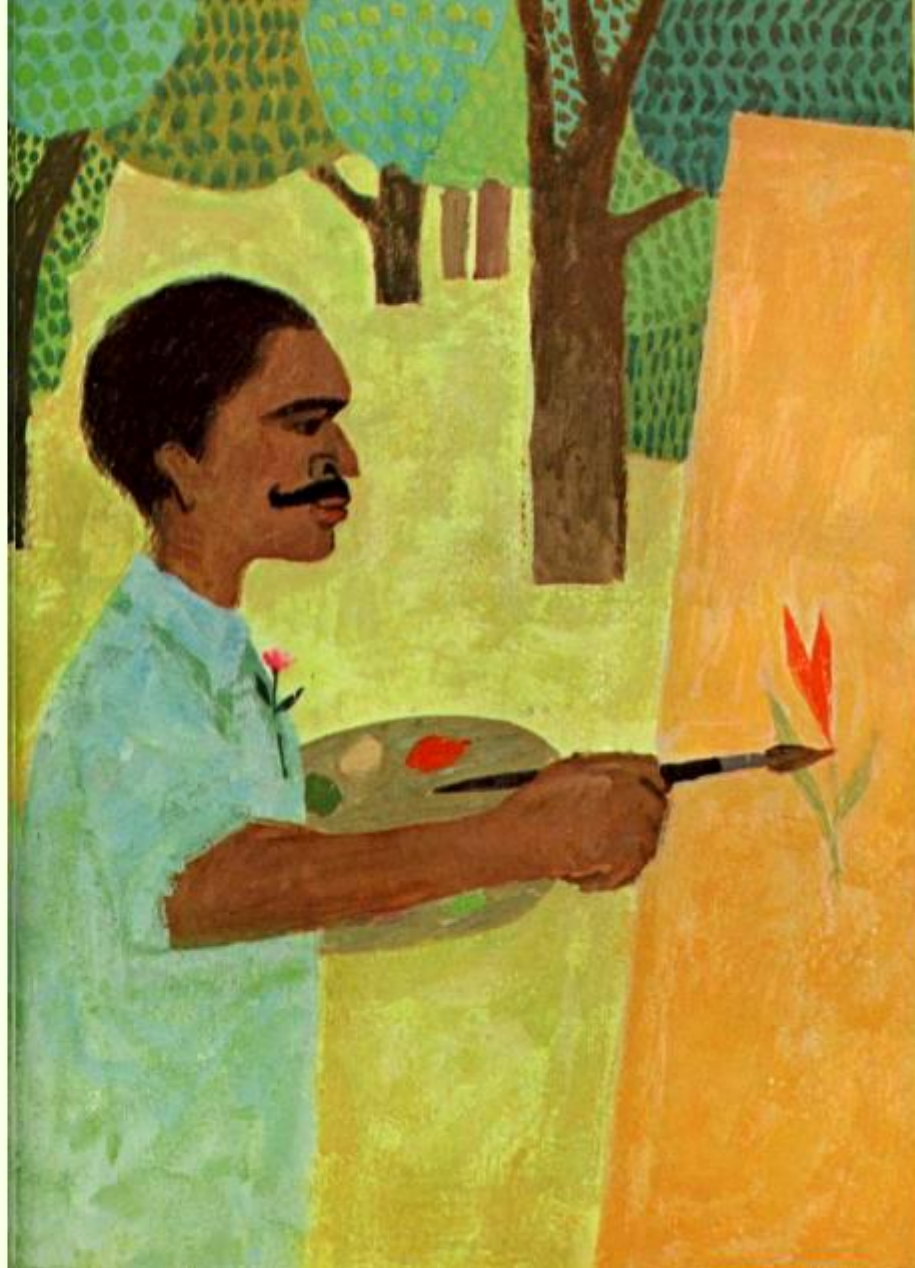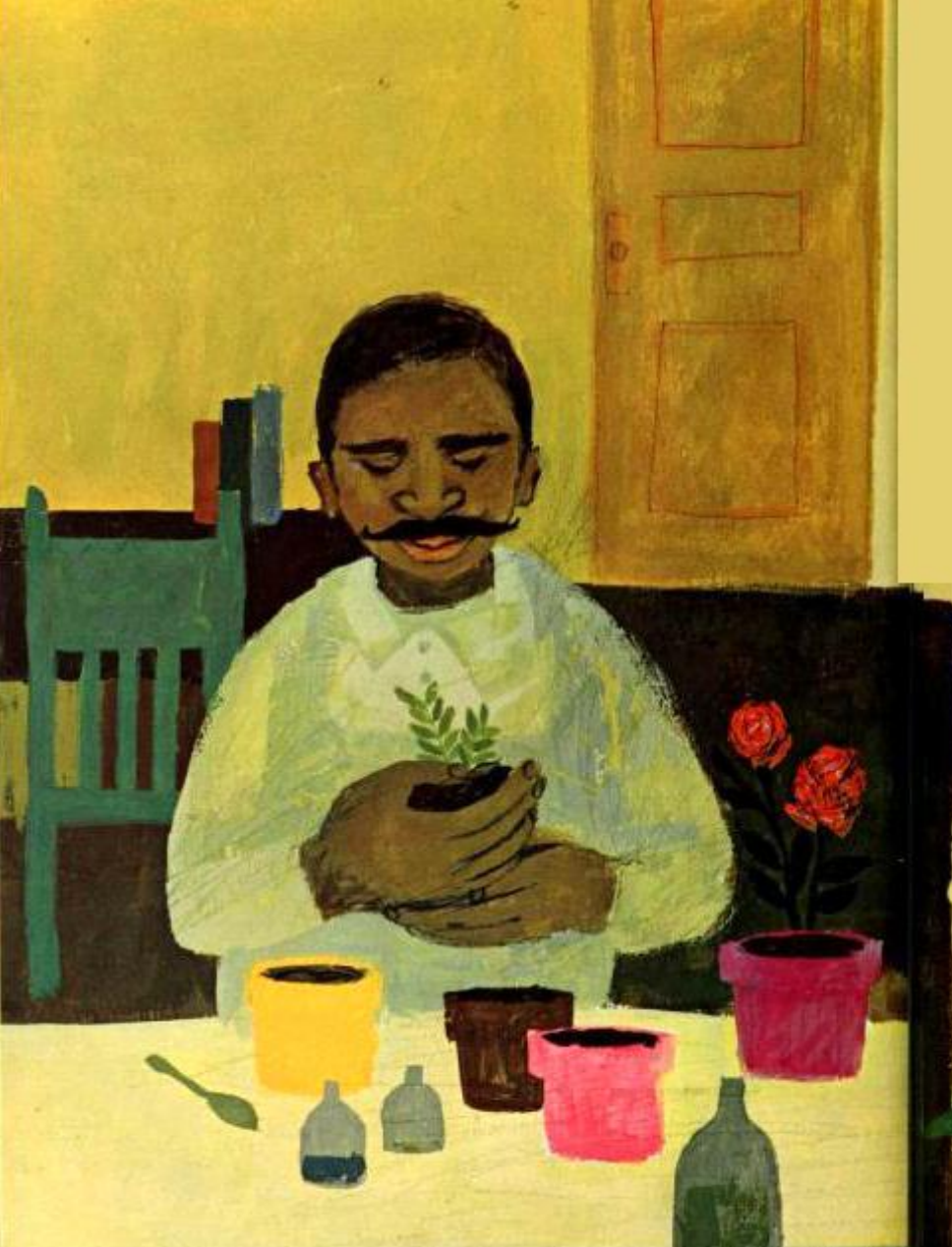
जॉर्ज ने जितना अधिक चिंतन-मनन किया वो उतना ही अधिक अपने लोगों की मदद करना चाहता था. उसे यह भी याद था कि पड़ोसी उसे "प्लांट डॉक्टर" बुलाते थे.

पौधों के प्रति वो अपने प्रेम को कभी नहीं भूला. इतने वर्षों वो इधर-उधर ज़रूर भटका लेकिन उसने हमेशा अपने कमरे में कुछ पौधे उगाये.

इसलिए, जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने कृषि की पढ़ाई को चुना. उसने पौधों, फूलों और मिट्टी के बारे में सीखा. उन्होंने खरपतों के नाम भी सीखे. खरपत भी उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण थीं. वो अक्सर कहता था: "एक खरपतवार गलत जगह उगने वाला फूल है."

वो अभी भी सवाल पूछता था. अगर लोग और पुस्तकों में उसे उत्तर नहीं मिलते, तो वो स्वयं उनके उत्तर खोजता था. उसने खुद पौधों के साथ अनेकों प्रयोग किए. इस तरह उसने उन रहस्यों को जाना जिन्हें और कोई नहीं जानता था.

जॉर्ज ने कॉलेज खत्म करने के बाद तुरंत पढ़ाना शुरू किया. फिर उसे अलबामा जाने का एक निमंत्रण मिला. वहां पर नीग्रो छात्रों के लिए एक कॉलेज था जिसे एक कृषि विशेषज्ञ की सख्त आवश्यकता थी. टुस्केजी इंस्टीट्यूट में, जॉर्ज वॉशिंगटन कार्वर ने अपना बाकी सारा जीवन बिताया.

अलबामा में, प्रोफेसर कार्वर ने उन छात्रों और गरीब नीग्रो किसानों को पढ़ाया, जो मिट्टी से अपनी आजीविका अर्जित करते थे. उन्होंने किसानों को बेहतर फसल उगाना सिखाया.
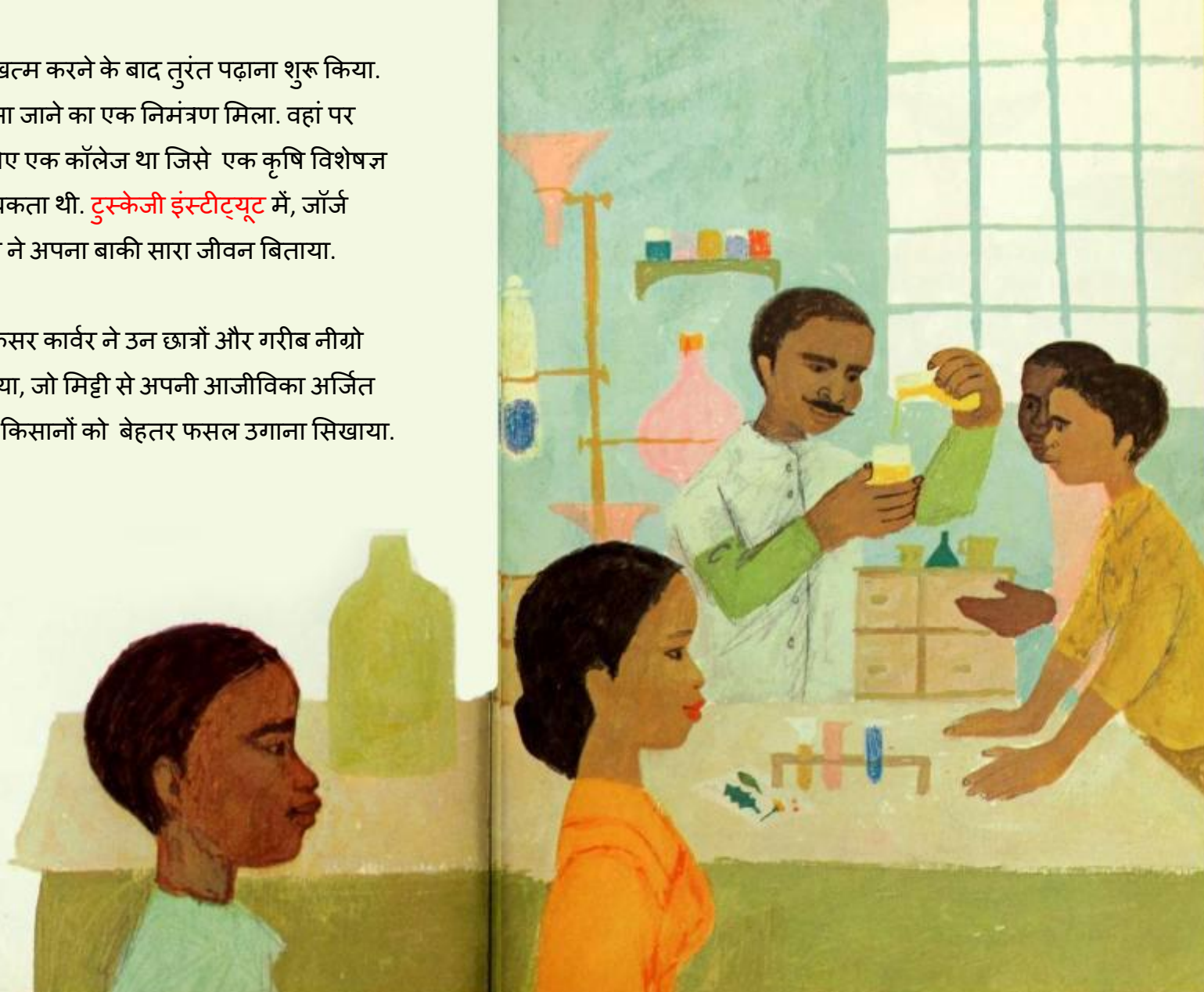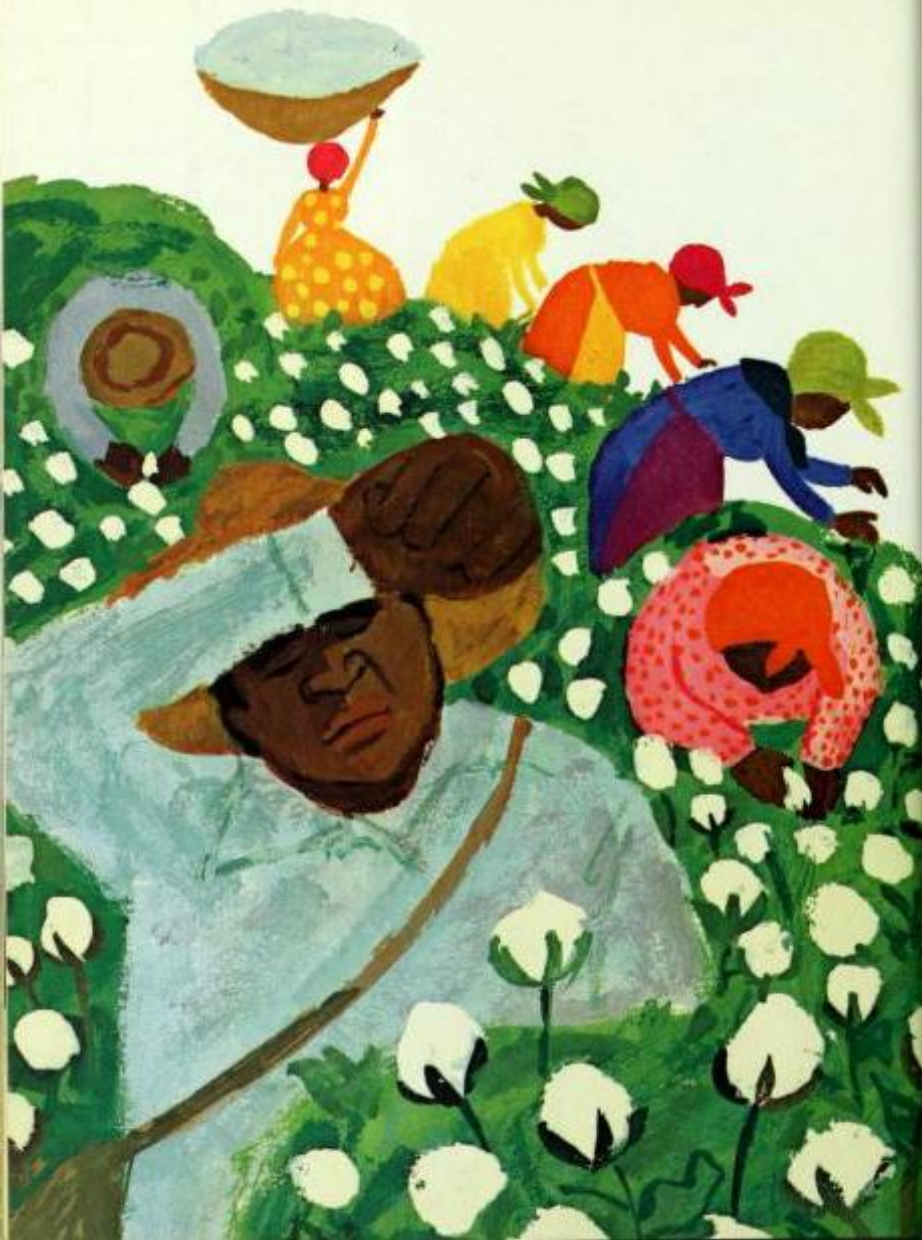
उस समय अधिकांश किसान कपास उगाते थे. लेकिन कभी-कभी बारिश या कीड़ों से उनकी पूरी फसल नष्ट हो जाती थीं और फिर किसानों को खाने तक को नहीं मिलता था.

प्रोफ़ेसर कार्वर ने उनसे अन्य फसलें बोने को कहा. शकरकंदी और मूंगफली अच्छी फसलें थीं. उन्हें उगाना भी आसान था. कार्वर ने कहा कि केवल कपास बोन से मिट्टी को नुकसान पहुंचेगा. अगर हर साल किसान अलग-अलग फसलें लगाएंगे तो बेहतर होगा.

शुरू में किसानों ने कार्वर की सलाह को नहीं माना. वे मूंगफली और शकरकंदी लगाने से डरते थे. उन्हें लगता था कि कोई भी उन फसलों को नहीं खरीदेगा.

लेकिन प्रोफ़ेसर कार्वर ने अपनी प्रयोगशाला में कई प्रयोग किए. उन्होंने शकरकंदी से कई चीजें बनाईं. उन्होंने उससे साबुन, कॉफी और स्टार्च बनाया. उन्होंने शकरकंदी से सौ से ज्यादा चीजें बनाईं.

उन दिनों में लोग मूंगफली को "बंदर भोजन" कहते हैं. लेकिन प्रोफेसर कार्वर के अनुसार मूंगफली भी लोगों के लिए बहुत अच्छी थी. उन्होंने दिखाया कि मूंगफली से अनेकों चीजें बनाई जा सकती थीं. कागज, स्याही, शेविंग क्रीम, सॉस, लिनोलियम, शैम्पू और यहां तक कि दूध! असल में उन्होंने मूंगफली से तीन सौ से ज़्यादा अलग-अलग तरह के उत्पाद बनाए.

एक बार, जब टस्केजी में महत्वपूर्ण मेहमान आये तब डॉ. कार्वर ने उनके लिए भोजन का मेनू चुना. मेहमानों ने खाने की मेज पर बैठकर सूप, क्रीमयुक्त चिकन, ब्रेड, सलाद, कॉफी, कैंडी, केक और आइसक्रीम का आनंद लिया. उन्हें तब बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्हें पता चला कि भोजन पूरी तरह मूंगफली से बना था!
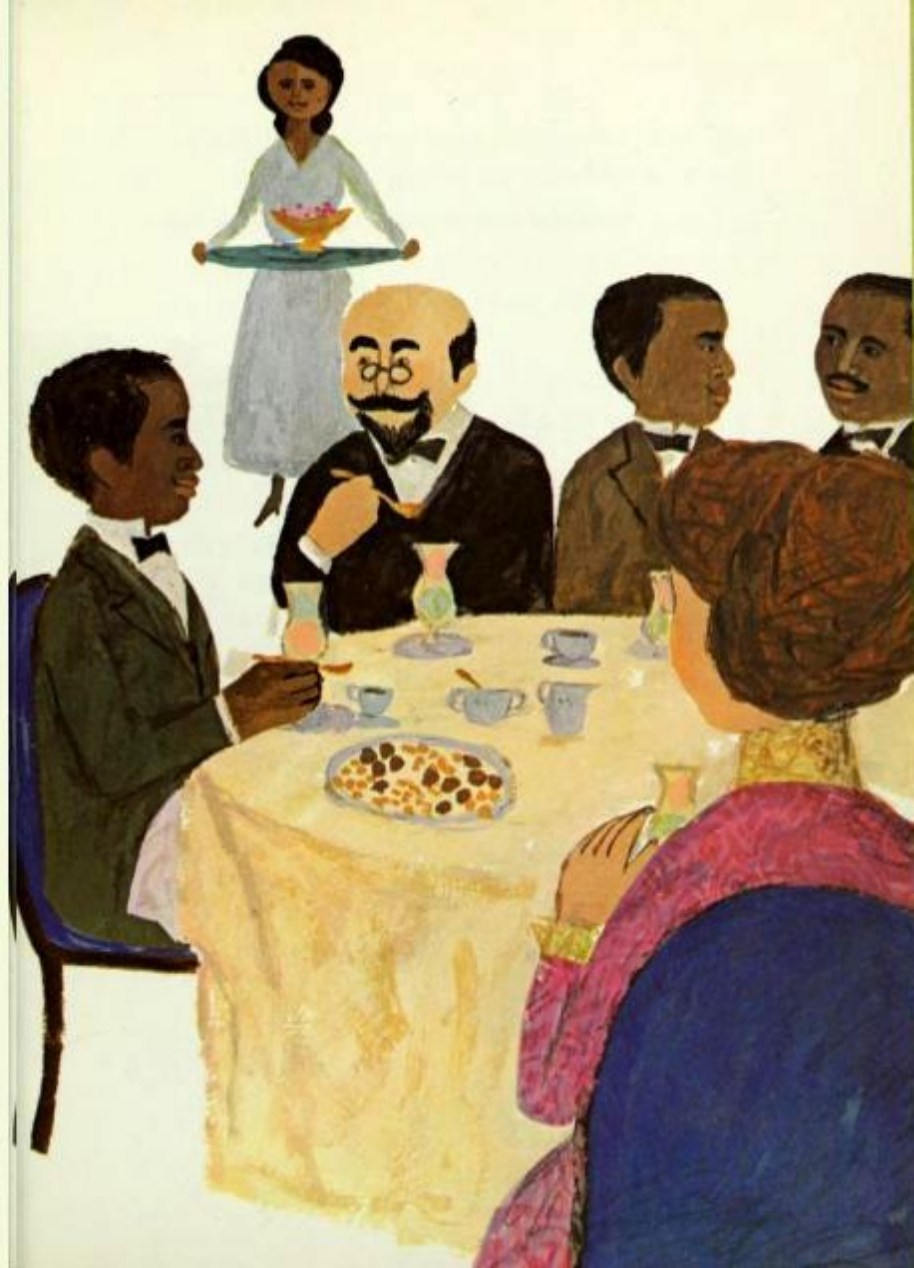
धीरे-धीरे, किसानों ने जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर की बात सुनी. उन्होंने मूंगफली और शकरकंदी लगाईं. और जल्द ही ये दोनों फसलें अलबामा की दो सबसे महत्वपूर्ण फसलें बन गईं.
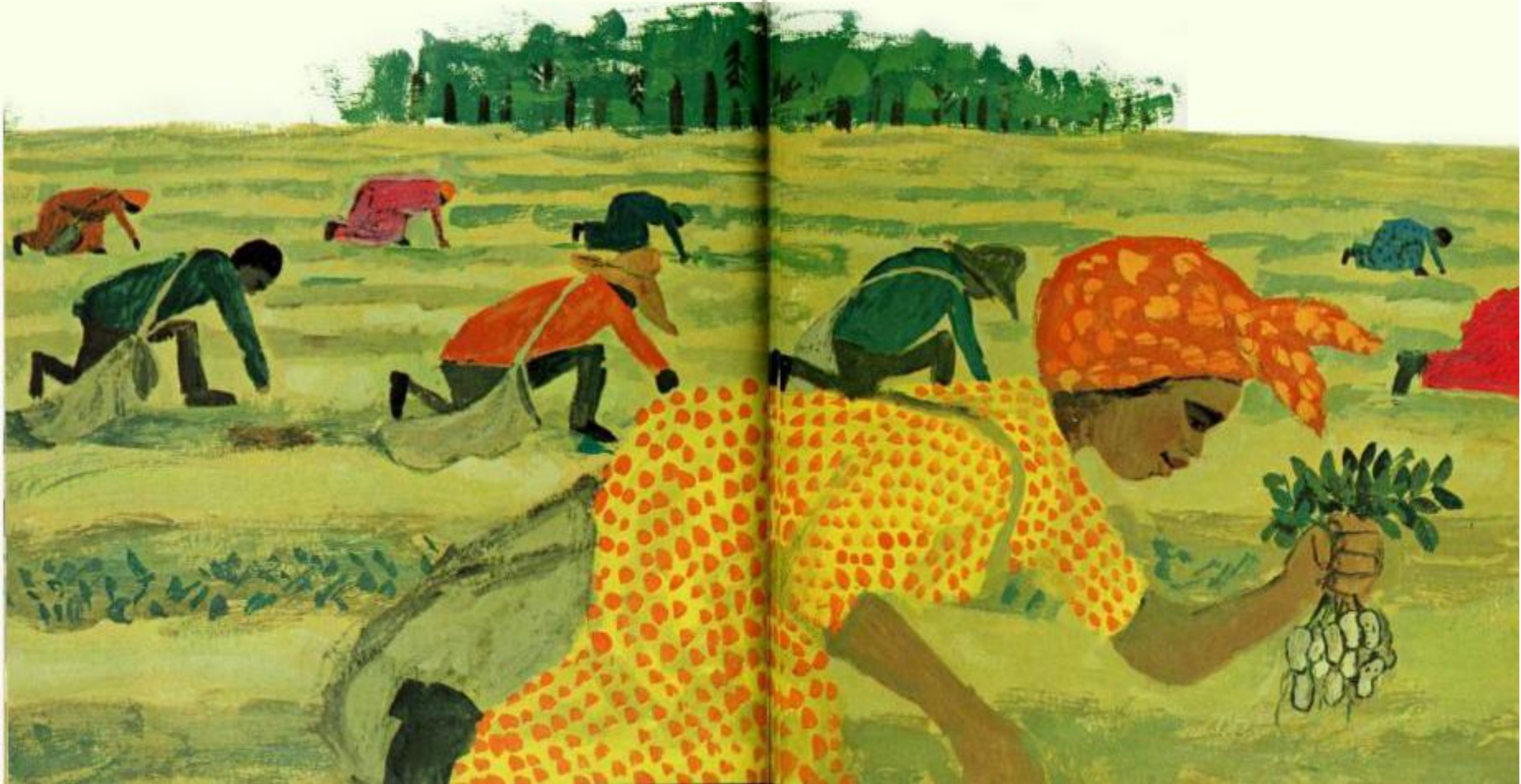
जल्द ही पूरे देश को डॉ. कार्वर और उनके महान शोध के बारे में पता चला. उन्हें राष्ट्रपति और अन्य महत्वपूर्ण लोगों द्वारा सम्मानित किया गया. हर दिन, डॉ. कार्वर का मेलबॉक्स किसानों और वैज्ञानिकों के पत्रों से भरा होता था. वे सभी उनकी सलाह चाहते थे. उन्हें बहुत ज़्यादा पैसों की नौकरियों के ऑफर मिले, जिन्हें उन्होंने ठुकरा दिया. उनके लिए पैसा महत्वपूर्ण नहीं था. उन्होंने जो चेक मिलते थे वो अक्सर उन्हें भुनाने के लिए बैंक भी नहीं जाते थे.

अपने पूरे जीवन भर, जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने दूसरों से कुछ अपेक्षा नहीं की. उन्होंने हमेशा खुद दूसरों की मदद की. वह अकेले रहते थे और अपना सब कामकाज खुद करते थे. वो खुद अपने कपड़े धोते थे और उनमें पैबंद सिलते थे. वो खुद अपने हाथ से बने साबुन का इस्तेमाल करते थे और अपने हाथों से उगा भोजन खाते थे.

डॉ. कार्वर को दुनिया के कई हिस्सों से भाषण देने का निमंत्रण मिलते थे, लेकिन वो बहुत कम ही टस्केजी छोड़ते थे. उनके पास टस्केजी में करने को बहुत कुछ था. उन्होंने अपनी चित्रकारी जारी रखी. उन्होंने अपनी प्रयोगशाला और ग्रीनहाउस में काम किया और कई नई चीजों की खोज की. उन्होंने अलबामा की मिट्टी और पौधों के कई प्राकृतिक रंग (डाई) बनाये.

अस्सी साल से अधिक उम्र तक और मृत्यु के बिल्कुल करीब आने तक डॉ. कार्वर लगातार काम करते रहे. हर रात जब शहर के बाकी लोग सो रहे होते, तब डॉ. कार्वर की खिड़की में से रोशनी चमक रही होती थी.
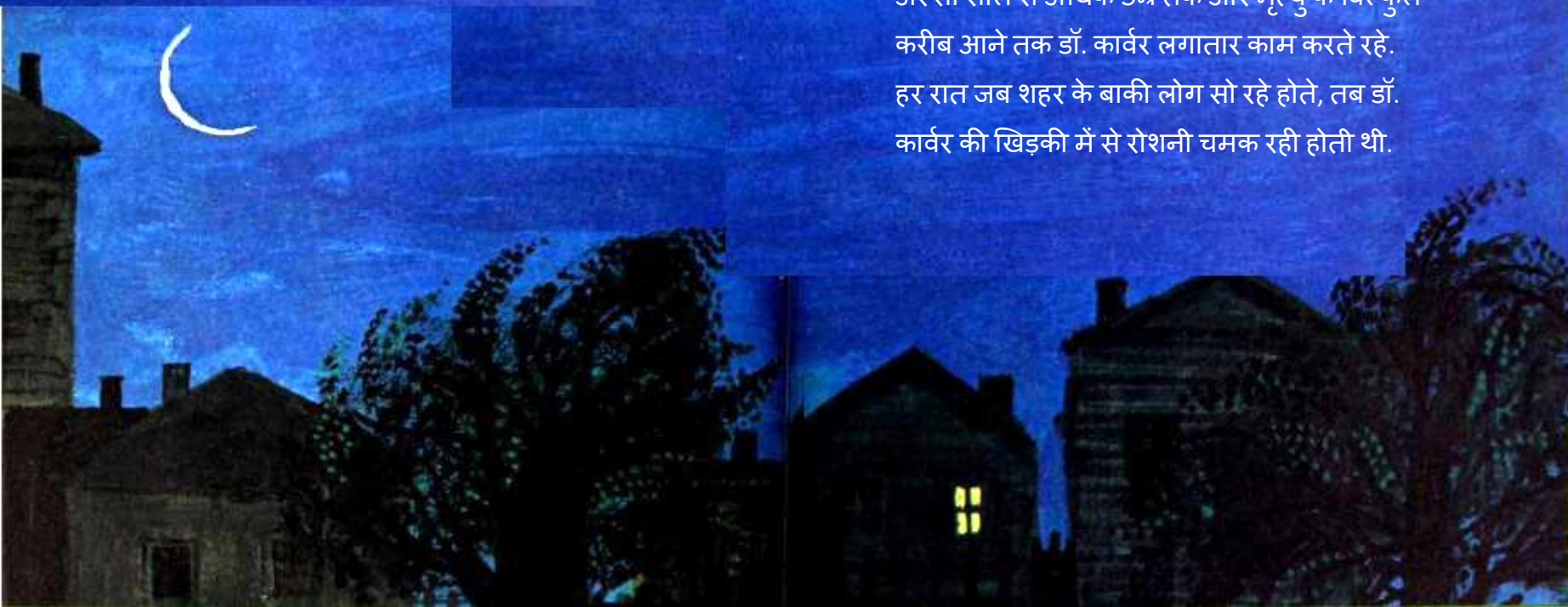
एक गुलाम बच्चा जो बेहद गरीबी में पैदा हुआ और जिसका भविष्य बिल्कुल अन्धकार में था वो बड़ा होकर देश का एक महान वैज्ञानिक बना. डॉ. जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने अपनी मेहनत न केवल अपने देश के लोगों की मदद की, उन्होंने पूरी दुनिया के लोगों की भलाई की.

समाप्त